आत्मिक परिश्रम करो।

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

हमारे प्रभु यीशु मसीह का नाम धन्य हो। आपका स्वागत है! आइए परमेश्वर के वचन में गहराई से उतरें—जो हमारे पथ का प्रकाश और हमारे पांवों की दीपक है।

भजन संहिता 119:105
तेरा वचन मेरे पांव के लिए दीपक और मेरे मार्ग के लिए प्रकाश
है।

बाइबल सिर्फ एक किताब नहीं है; यह जीवित वचन है जो हमारे जीवन को आकार देता है और हमारे कदमों को मार्गदर्शित करता है।

हममें से कई लोग “शरीर”—हमारे शारीरिक स्वास्थ्य, कैरियर और भौतिक लक्ष्यों में काफी प्रयास करते हैं। यह स्वाभाविक रूप से गलत नहीं है क्योंकि बाइबल पुष्टि करती है कि शारीरिक देखभाल आवश्यक है।

1 तीमुथियुस 4:8
क्योंकि शरीर का व्यायाम थोड़ा लाभकारी है, परन्तु
धार्मिकता हर प्रकार से लाभकारी है, क्योंकि इसमें वर्तमान
और आने वाली दोनों जीवनों के लिए वादा है।

आत्मिक परिश्रम करो।

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

लेकिन यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि हम आध्यात्मिक प्रयासों को प्राथमिकता दें, क्योंकि आध्यात्मिक विकास का मूल्य अनंतकालीन है। बाइबल सिखाती है:

यूहन्ना 6:63
मांस कुछ भी लाभ नहीं देता; जो शब्द मैं तुमसे कहता हूं वे आत्मा हैं और जीवन हैं।

आत्मिक परिश्रम शाश्वत फल देता है।

रोमियों 12:11
जो काम करना है उसमें सुस्ती न करो, आत्मा में जोश से जलो,
प्रभु की सेवा करो।

यह पद हमें बताता है कि आत्मा में उत्साही होना कितना महत्वपूर्ण है। उत्साही होने का मतलब है प्रेमपूर्ण और समर्पित होना, न कि निष्क्रिय या आधे दिल से सेवा करना। परमेश्वर की सेवा की तात्कालिकता सम्पूर्ण शास्त्र में स्पष्ट

आत्मिक परिश्रम करो।

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

है क्योंकि वह हमारी पूरी निष्ठा के पात्र हैं।

1. भलाई करने में परिश्रम।

1 पतरस 3:13
यदि तुम भलाई करने को तत्पर हो तो कौन तुम्हें नुकसान
पहुँचा सकता है?

ईसाई दुनिया में भलाई के दूत बनने के लिए बुलाए गए हैं। दयालुता के कार्य परमेश्वर के प्रेम की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति हैं जो हमारे माध्यम से काम करता है। इसमें शामिल हैं:

गरीबों, विधवाओं और अनाथों की सहायता करना:

याकूब 1:27
जो धर्म परमेश्वर और पिता के सामने पवित्र और निर्दोष है, वह
है अनाथों और विधवाओं की उनकी विषम परिस्थिति में सहायता करना और अपने आपको संसार की बेजड़ी से बचाना।

दूसरों को क्षमा करना:

आत्मिक परिश्रम करो।

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

मत्ती 6:14-15
यदि तुम मनुष्यों के पापों को क्षमा करते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। लेकिन यदि तुम
लोगों के पापों को क्षमा नहीं करते, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे पापों को क्षमा नहीं करेगा।

शांति और न्याय को बढ़ावा देना:

मीका 6:8
हे मानव, प्रभु ने तुम्हें बताया है कि क्या भला है; और प्रभु तुझसे क्या चाहता है? केवल न्याय करना, दया से प्रेम करना, और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चलना।

ये सभी उदाहरण हैं कि हम आत्मा में कैसे परिश्रमी हो सकते हैं।

2. एक-दूसरे से प्रेम करने में परिश्रम।

1 पतरस 4:8
सबसे बढ़कर आपस में गहरा प्रेम रखो, क्योंकि प्रेम अनेक
पापों को ढक देता है।

आत्मिक परिश्रम करो।

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

प्रेम मसीही शिष्यता की नींव है।

मत्ती 22:37-39
“प्रभु अपने परमेश्वर से अपना सम्पूर्ण हृदय, सम्पूर्ण प्राण, और सम्पूर्ण मन से प्रेम करना।” यह पहला और बड़ा आदेश
है। दूसरा इससे समान है: “अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।”

यीशु ने स्वयं कहा:

यूहन्ना 13:34-35
मैं तुम्हें एक नया आदेश देता हूँ: एक-दूसरे से प्रेम रखो, जैसा मैंने तुमसे प्रेम रखा है। इससे सब लोग जानेंगे कि तुम मेरे शिष्य हो यदि तुम एक-दूसरे से प्रेम करते हो।

सच्चा मसीही प्रेम बलिदानी, धैर्यवान और निःस्वार्थ होता है।

1 कुरिन्थियों 13:4-7
प्रेम धैर्यवान और दयालु है; प्रेम ईर्ष्या नहीं करता;

आत्मिक परिश्रम करो।

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

प्रेम घमण्ड नहीं करता; वह अभिमानी नहीं होता; वह असभ्य व्यवहार नहीं करता; वह स्वार्थी नहीं होता; वह क्रोधित नहीं होता; वह दूसरों की गलती याद नहीं रखता; प्रेम अन्याय में
आनंद नहीं करता, परन्तु सत्य में आनन्द करता है; वह सब कुछ
सह लेता है, सब कुछ विश्वास करता है, सब कुछ आशा करता है, सब
कुछ धैर्य रखता है।

प्रेम का अर्थ है क्षमा देना:

इफिसियों 4:32
एक-दूसरे के प्रति कोमल और दयालु बनो, एक-दूसरे को क्षमा करो जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हें क्षमा किया है।

और नम्रता से सेवा करना:

गलातियों 5:13
प्रेम के माध्यम से एक-दूसरे की सेवा करो।

आत्मिक परिश्रम करो।

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 7

3. परमेश्वर की सेवा में परिश्रम।

कुलुस्सियों 3:23-24
जो कुछ तुम करते हो, मन से करो, जैसे प्रभु के लिए, न कि मनुष्यों के लिए, यह जानते हुए कि तुम प्रभु से उत्तराधिकार
के अधिकारी के रूप में पुरस्कार पाओगे। क्योंकि तुम प्रभु
मसीह की सेवा कर रहे हो।

परमेश्वर की सेवा केवल प्रचार, शिक्षण या सभा में खड़े रहने तक सीमित नहीं है। यीशु ने कहा:

मत्ती 25:40
मैं तुमसे सच कहता हूँ, जो तुमने इन मेरे सबसे छोटे भाइयों
में से एक के लिए किया, वह मुझसे किया है।

चर्च की सफाई करना, गरीबों की सेवा करना या जरूरतमंदों की मदद करना, यदि सही हृदय से किया जाए तो वह परमेश्वर की सेवा है।

1 कुरिन्थियों 15:58

आत्मिक परिश्रम करो।

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 8

इसलिए, मेरे प्रिय भाइयों, स्थिर और अडिग रहो और प्रभु के
कार्य में सदैव बढ़ते रहो, क्योंकि तुम जानते हो कि प्रभु
में तुम्हारा श्रम व्यर्थ नहीं है।

4. प्रार्थना में परिश्रम।

लूका 18:1
यीशु ने अपने शिष्यों को एक दृष्टांत सुनाया ताकि वे हमेशा प्रार्थना करें और हार न मानें।

प्रार्थना हमारे परमेश्वर के साथ संबंध का एक आवश्यक हिस्सा है।

1 थिस्सलुनीकियों 5:17
लगातार प्रार्थना करो।

इसका मतलब निरंतर मौखिक प्रार्थना नहीं है, बल्कि दिन भर एक प्रार्थनात्मक मनस्थिति बनाए रखना है।

आत्मिक परिश्रम करो।

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 9

यीशु ने स्वयं एक निरंतर प्रार्थनात्मक जीवन जिया:

मार्क 1:35
बहुत सुबह जब अभी अंधेरा था, यीशु उठे, घर से निकलकर एक निर्जन स्थान पर गए और वहाँ प्रार्थना करने लगे।

प्रतिदिन केंद्रित प्रार्थना के लिए समय निकालना उस हृदय को दर्शाता है जो परमेश्वर से जुड़ना चाहता है और यह आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देता है।

याकूब 5:16
धार्मिक व्यक्ति की प्रार्थना बहुत प्रभावशाली होती है।

5. वचन के अध्ययन में परिश्रम।

बाइबल हमारी आध्यात्मिक आहार है।

2 तीमुथियुस 3:16-17

आत्मिक परिश्रम करो।

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 10

सभी शास्त्र परमेश्वर द्वारा प्रेरित हैं और शिक्षण, सुधार, सुधार और धार्मिकता के प्रशिक्षण के लिए उपयोगी हैं, ताकि परमेश्वर का सेवक हर अच्छे कार्य के लिए पूरी तरह से तैयार
हो सके।

भजन संहिता 1:2-3
उसका आनंद यहोवा के नियम में है, और वह दिन-रात उसके नियम पर ध्यान देता है। वह वृक्ष के समान है जो नदियों के किनारे लगाया गया हो, जो अपना फल अपने समय पर देता है और जिसके पत्ते मुरझाते नहीं।

वचन का अध्ययन केवल ज्ञान के लिए नहीं, बल्कि परिवर्तन के लिए है।

रोमियों 12:2
इस संसार के ढाँचे के अनुसार अपने आपको ढालो नहीं, बल्कि
अपने मन को नये ढंग से परिवर्तित करो, ताकि तुम यह जान सको कि परमेश्वर की इच्छा क्या है, जो अच्छी, स्वीकार्य और पूर्ण
है।

जितना अधिक हम शास्त्र में डूबेंगे, उतना ही हमारा मन परमेश्वर

आत्मिक परिश्रम करो।

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 11

की इच्छा के अनुरूप होगा।

कुलुस्सियों 3:16
मसीह का वचन तुम में भरपूर रूप से वास करे, और तुम सभी ज्ञान की बुद्धि से एक-दूसरे को शिक्षा और उपदेश दो।

6. परमेश्वर को देने में परिश्रम।

2 कुरिन्थियों 9:7
हर कोई जो कुछ देने का निश्चय करे, वह मन से दे, अनिच्छा या मजबूरी से नहीं, क्योंकि परमेश्वर प्रसन्नचित्त दाता को प्रेम करता है।

दान केवल धन के बारे में नहीं है; इसमें हमारा समय, प्रतिभा और संसाधन भी शामिल हैं।

मत्ती 6:19-21
अपने लिए पृथ्वी पर खजाने न जमा करो, जहाँ कीड़े और जंग उसे नष्ट कर देते हैं और चोर चोरियाँ करते हैं। परन्तु अपने लिए स्वर्ग में खजाने जमा करो, जहाँ न कीड़े न जंग न चोर उसे नष्ट

आत्मिक परिश्रम करो।

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 12

कर सकें। क्योंकि जहाँ तुम्हारा खजाना है, वहाँ तुम्हारा मन
भी होगा।

उदारता से देना उन सभी बातों के लिए कृतज्ञ हृदय का प्रतिबिंब है जो परमेश्वर ने हमें दी हैं।

नीतिवचन 3:9-10
अपने धन और अपने उपज के प्रथम फलों से प्रभु का सम्मान करो, तब तुम्हारे खलिहान भर जाएंगे और तुम्हारी शराब के दब्बे नए मदिरा से उमड़ पड़ेंगे।

परमेश्वर आपको आशीर्वाद दे कि आप परिश्रम और विश्वास में बढ़ते रहें और अपने जीवन के सभी क्षेत्रों में उनके आत्मा की पूर्णता को धारण करें।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp